गड़बड़ खिलौने और बच्चों की समझदारी

जब कोई खिलौना काम नहीं कर पाता तो बच्चे समझ पाते हैं कि गड़बड़ खिलौने में है या वे खुद कोई गलती कर रहे हैं।

मेसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी के हायवॉन ग्यूऑन ने शिशुओं की तर्क प्रक्रिया को समझने के लिए एक प्रयोग किया। उन्होंने 16 महीने के बच्चे को एक खिलौना दिया, जो एक बटन के दबाने से चलता था। बच्चे के हाथ में सौंपने से पहले दो वयस्कों ने यह दिखाया कि इस खिलौने को कैसे चलाते हैं। खिलौना कुछ ऐसा था कि जब बटन दबाया जाता तो वह दो में से एक बार ही ठीक से काम कर पाता था। वयस्कों ने खिलौने को चलाकर यह बात बच्चे के सामने स्पष्ट कर दी। इसके बाद उन्होंने खिलौना बच्चे को दे दिया। खिलौने में ऐसी व्यवस्था थी कि अब उसका बटन काम नहीं करता था।

बच्चे को यह समझने में ज़्यादा देर नहीं लगी कि यह खिलौना गड़बड़ था। यह तो वह पहले ही देख चुका था कि वयस्कों के हाथों में भी यह दो में से एक बार ही काम करता था। 17 में से 12 बच्चे इस खिलौने को फेंककर दूसरे खिलौने की तरफ बढ़ गए।

एक अन्य प्रयोग में एक वयस्क के हाथ में ऐसा खिलौना था जो बटन दबाने पर हमेशा काम करता था जबकि दूसरे वयस्क का खिलौना कभी काम नहीं करता था।

एक बार फिर ये खिलौने बच्चों को दे दिए गए। इस बार जब खिलौना काम नहीं करता था तो बच्चे मानते थे कि उन्होंने कुछ गलती की है। इस मामले में 19 बच्चों को यह खिलौना दिया गया और काम न करने पर उनमें से 13 ने इसे अपने माता-पिता को देकर मदद चाही।

इस प्रयोग से लगता है कि बच्चे जब कोई समस्या हल करते हैं तब वे कुछ हद तक एक नन्हे वयस्क जैसा व्यवहार करते हैं। यह निष्कर्ष बच्चों में संज्ञान प्रक्रिया सम्बंधी मौजूदा विचारों से मेल खाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***